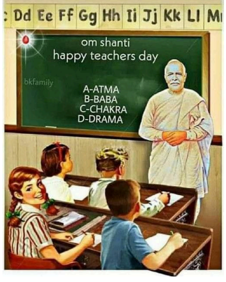

08-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठेबच्चे - तुम इस पाठशाला में आये हो स्वर्ग के लिए पासपोर्ट लेने, आत्म-अभिमानी बनो और अपना नाम रजिस्टर में नोट करा दो तो स्वर्ग में आ जायेंगे"

Emotion doesn't like this

प्रश्नः- कौन-सी स्मृति न रहने के कारण बच्चे बाप का रिगार्ड नहीं रखते हैं?

जिसको पाने के लिए लोग अपना गला भी उतार कर रखने को तैयार है..

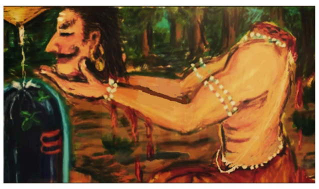

उत्तर:- कई बच्चों को यही स्मृति नहीं रहती कि जिसको सारी दुनिया पुकार रही है, याद कर रही है, वही ऊंच ते ऊंच बाप हम बच्चों की सेवा में उपस्थित हुआ है। यह निश्चय नम्बरवार है, जितना जिसको निश्चय है उतना रिगार्ड रखते हैं।

गीत:-जो पिया के साथ है........ Click

जो पिया के साथ है
उसके लिए बरसात है
जो पिया के साथ है
उसके लिए बरसात है
जो पिया के साथ है

जिसकी दुनिया में मिलान है
सुख में जिसका दिल मगन है
यह ज़मीन है दिल सहीं में
रात किसी की राज़ है
जिसकी दुनिया में मिलान है
सुख में जिसका दिल मगन है
यह ज़मीन है दिल सहीं में
रात किसी की राज़ है
उसके लिए बरसात है
जो पिया के साथ है
उसके लिए बरसात है
जो पिया के साथ है

दर्द से जो दूर है
जो नशे में चूर है
दर्द से जो दूर है
जो नशे में चूर है
जिसकी आँखों में किसी की आँख है
जिसकी आँखों में किसी की आँख है
जिसके हाथों में किसी का हाथ है
जिसके हाथों में किसी का हाथ है
उसके लिए बरसात है
जो पिया के साथ है
उसके लिए बरसात है
जो पिया के साथ है

जल रहा है दिल का तन्न मनन
जिसके नैनो में है सावन
जल रहा है दिल का तन्न मनन
जिसके नैनो में है सावन
उसके लिए ये घर है अकेले में
सपने की यह बात है
जो पिया के साथ है
उसके लिए बरसात है
जो पिया के साथ है..

ओम् शान्ति। सब बच्चे ज्ञान सागर के साथ तो हैं ही। इतने सब बच्चे एक जगह तो रह नहीं सकते। भल जो साथ हैं वह नज़दीक में डायरेक्ट ज्ञान

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

—: Example: —

तन को जोगी सब करें,
मन को बिरला कोई.
सब सिद्धि सहजे पाइए,
जे मन जोगी होइ.
अर्थ : SmitCreation.com
शरीर में भगवे वस्त्र धारण करना सरल है, पर मन को योगी बनाना बिरले ही व्यक्तियों का काम है. यदि मन योगी हो जाए तो सारी सिद्धियाँ सहज ही प्राप्त हो जाती हैं.

Two Types of Tears in the End

Click

Don't take it easy
Else → खून के आंसू आयेंगे

जिसको पाने के लिए लोग अपना गला भी उतार कर रखने को तैयार है..

Point to be Noted | ये पक्का समझ लो..

08-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

सुनते हैं और जो दूर हैं उन्हों को देरी से मिलता है। परन्तु ऐसे नहीं कि साथ वाले जास्ती उन्नति को पाते हैं और दूर वाले कम उन्नति को पाते हैं। नहीं, प्रैक्टिकल देखा जाता है जो दूर हैं वह जास्ती पढ़ते हैं और उन्नति को पाते हैं। इतना जरूर है बेहद का बाप यहाँ हैं। ब्राह्मण बच्चों में भी नम्बरवार हैं। बच्चों को दैवीगुण भी धारण करने हैं। कोई-कोई बच्चों से बड़ी-बड़ी ग़फलत होती है। समझते भी हैं बेहद का बाप जिसको सारी सृष्टि याद करती है, वह हमारी सेवा में उपस्थित है और हमको ऊंच ते ऊंच बनाने का मार्ग बताते हैं। बहुत प्यार से समझाते हैं फिर भी इतना रिगार्ड देते नहीं। बांधेलियाँ कितनी मार खाती हैं, तड़फती हैं फिर भी याद में रह अच्छा उठा लेती हैं। पद भी ऊंच बन जाता है। बाबा सबके लिए नहीं कहते हैं। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तो हैं ही। बाप बच्चों को सावधान करते हैं, सब तो एक जैसे हो न सकें। बांधेलियाँ आदि बाहर में रहकर भी बड़ी कमाई करती हैं। यह गीत तो भक्ति मार्ग वालों का बना हुआ है। परन्तु तुम्हारे लिए अर्थ करने जैसा भी है,

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

वह क्या जानें, पिया कौन है, किसका पिया है? आत्मा खुद को ही नहीं जानती तो बाप को कैसे जाने। है तो आत्मा ना। मैं क्या हूँ, कहाँ से आई हूँ - यह भी पता नहीं है। सब हैं देह-अभिमानी। आत्म-अभिमानी कोई है नहीं। अगर आत्म-अभिमानी बनें तो आत्मा को अपने बाप का भी पता हो। देह-अभिमानी होने के कारण न आत्मा को, न परमपिता परमात्मा को जानते हैं। यहाँ तो तुम बच्चों को बाप बैठ सम्मुख समझाते हैं। यह बेहद का स्कूल है। एक ही एम ऑब्जेक्ट है - स्वर्ग की बादशाही प्राप्त करना। स्वर्ग में भी बहुत पद हैं। कोई राजा-रानी कोई प्रजा। बाप कहते हैं - मैं आया हूँ तुमको फिर से डबल सिरताज बनाने। सब तो डबल सिरताज बन न सकें। जो अच्छी रीति पढ़ते हैं वह अपने अन्दर में समझते हैं हम यह बन सकते हैं। सरेन्डर भी हैं, निश्चय भी है। सब समझते हैं इनसे कोई ऐसा छी-छी काम नहीं होता है। कोई-कोई में बहुत अवगुण होते हैं। वह थोड़ेही समझेंगे कि हम कोई इतना ऊंच पद पायेंगे इसलिए पुरुषार्थ ही नहीं करते। बाप से पूछें कि मैं

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

यह बन सकता हूँ, तो बाबा झट बतायेंगे। अपने को देखेंगे तो झट समझेंगे बरोबर मैं ऊंच पद नहीं पा सकता हूँ। लक्षण भी चाहिए ना। सतयुग-त्रेता में तो ऐसी बातें होती नहीं। वहाँ है प्रालब्ध। बाद में जो राजायें होते हैं, वह भी प्रजा को बहुत प्यार करते हैं। यह तो मात-पिता है। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो। यह तो बेहद का बाप है, यह सारी दुनिया को रजिस्टर करने वाले हैं। तुम भी रजिस्टर करते हो ना। पासपोर्ट दे रहे हो। स्वर्ग का मालिक बनने के लिए यहाँ से तुमको पासपोर्ट मिलता है। बाबा ने कहा था सबका फोटो होना चाहिए, जो वैकुण्ठ के लायक हैं क्योंकि तुम मनुष्य से देवता बनते हो। बाजू में ताज व तख्त वाला फोटो हो। हम यह बन रहे हैं। प्रदर्शनी आदि में भी यह सैम्पुल रखना चाहिए - यह है ही राजयोग। समझो बैरिस्टर बनते हैं तो वह एक तरफ आर्डनरी ड्रेस में हो, एक तरफ बैरिस्टरी ड्रेस। वैसे एक तरफ तुम साधारण, एक तरफ डबल सिरताज। तुम्हारा एक चित्र है ना - जिसमें पूछते हो क्या बनना चाहते हो? यह बैरिस्टर आदि बनना है या राजाओं का राजा

बनना है। ऐसे चित्र होने चाहिए। बैरिस्टर जज आदि तो यहाँ के हैं। तुमको राजाओं का राजा नई दुनिया में बनने का है। एम ऑब्जेक्ट सामने है। हम यह बन रहे हैं। समझानी कितनी अच्छी है। चित्र भी बड़े अच्छे हों फुल साइज़ के। वह बैरिस्टरी पढ़ते हैं तो योग बैरिस्टर से है। बैरिस्टर ही बनते हैं। इनका योग परमपिता परमात्मा से है तो डबल सिरताज बनते हैं। अब बाप समझाते हैं बच्चों को एक्ट में आना चाहिए। लक्ष्मी-नारायण के चित्र पर समझाना बहुत सहज होगा। हम यह बन रहे हैं तो तुम्हारे लिए जरूर नई दुनिया चाहिए। नर्क के बाद है स्वर्ग।

अभी यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। यह पढ़ाई कितना ऊंच बनाने वाली है, इसमें पैसे आदि की दरकार नहीं है। पढ़ाई का शौक होना चाहिए। एक आदमी बहुत गरीब था, पढ़ने के लिए पैसे नहीं थे। फिर पढ़ते-पढ़ते मेहनत करके इतना साहूकार हो गया जो क्वीन विक्टोरिया का मिनिस्टर बन गया।

Point to be Noted

How lucky and Great we are...!

तुम भी अभी कितने गरीब हो। बाप कितना ऊंच पढ़ाते हैं। इसमें सिर्फ बुद्धि से बाप को याद करना है। बत्ती आदि जगाने की भी दरकार नहीं। कहाँ भी बैठेयाद करो। परन्तु माया ऐसी है जो बाप की याद भुला देती है। याद में ही विघ्न पड़ते हैं। यही तो युद्ध है ना। आत्मा पवित्र बनती ही है बाप को याद करने से। पढ़ाई में माया कुछ नहीं करती। पढ़ाई से याद का नशा ऊंच है, इसलिए प्राचीन योग गाया हुआ है। योग और ज्ञान कहा जाता है। योग के लिए ज्ञान मिलता है - ऐसे-ऐसे याद करो। और फिर सृष्टि चक्र का भी ज्ञान है। रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को और कोई नहीं जानते। भारत का प्राचीन योग सिखलाते हैं। प्राचीन तो कहा जाता है नई दुनिया को। उनको फिर लाखों वर्ष दे दिये हैं। कल्प की आयु भी अनेक प्रकार की बताते हैं। कोई क्या कहते, कोई क्या कहते। यहाँ तुमको एक ही बाप पढ़ा रहे हैं। तुम बाहर में भी जायेंगे, तुमको चित्र मिलेंगे। यह तो व्यापारी है ना। बाबा कहते कपड़े पर छप सकते हैं। अगर किसके पास बड़ी स्क्रीन प्रेस न हो

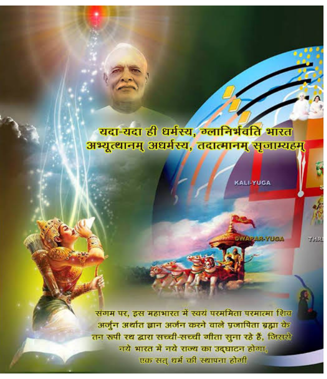

तो आधा-आधा कर दे। फिर जॉइंट ऐसा कर लेते हैं जो पता भी नहीं पड़ता है। बेहद का बाप, बड़ी सरकार कहते हैं, कोई छपाकर दिखाये तो मैं उनका नाम बाला करूँगा। यह चित्र कपड़े पर छपाए कोई विलायत ले जाए तो तुमको एक-एक चित्र का कोई 5-10 हज़ार भी दे देवे। पैसे तो वहाँ ढेर हैं। बन सकते हैं, इतनी बड़ी-बड़ी प्रेस हैं, शहरों की सीन सीनरी ऐसी-ऐसी छपती हैं - बात मत पूछो। यह भी छप सकते हैं। यह तो ऐसी फर्स्टक्लास चीज़ है - कहेंगे सच्चा ज्ञान तो इनमें ही है, और कोई के पास तो है ही नहीं। किसको पता ही नहीं - फिर समझाने वाला भी इंगलिश में होशियार चाहिए। इंगलिश तो सब जानते हैं। उन्हों को भी सन्देश तो देना है ना। वही विनाश अर्थ निमित्त बने हुए हैं ड्रामा अनुसार। बाबा ने बताया है उन्हों के पास बॉम्ब्स आदि ऐसे-ऐसे हैं जो दोनों अगर आपस में मिल जाएं तो सारे विश्व के मालिक बन सकते हैं। परन्तु यह ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है जो तुम योगबल से विश्व की बादशाही लेते हो। हथियार आदि से विश्व के मालिक बन न सकें। वह

Word Almighty Authority

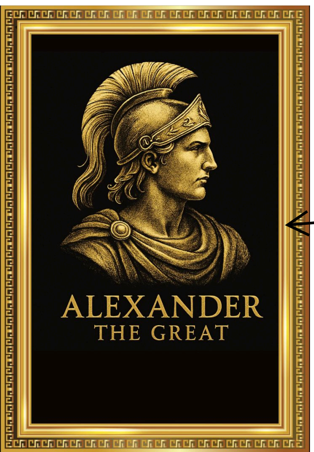

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Subtle Point to understand

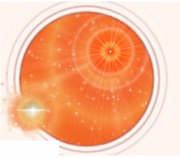

है साइन्स, तुम्हारी है साइलेन्स। सिर्फ बाप को और चक्र को याद करो, आपसमान बनाओ।

तुम बच्चे योगबल से विश्व की बादशाही ले रहे हो। वह आपस में लड़ेंगे भी जरूर। माखन बीच में तुमको मिलना है। श्रीकृष्ण के मुख में माखन का गोला दिखाते हैं। कहावत भी है दो आपस में लड़े, बीच में माखन तीसरा खा गया। है भी ऐसे। सारे विश्व की राजाई का माखन तुमको मिलता है। तो तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। वाह बाबा आपकी तो कमाल है। नॉलेज तो आपकी ही है। बड़ी अच्छी समझानी है। आदि सनातन देवी-देवता धर्म वालों ने विश्व की बादशाही कैसे प्राप्त की। यह किसको भी ख्याल में होगा नहीं। उस समय और कोई खण्ड होता नहीं। बाप कहते हैं मैं विश्व का मालिक नहीं बनता, तुमको बनाता हूँ। तुम पढ़ाई से विश्व के मालिक बनते हो। मैं परमात्मा तो हूँ ही अशरीरी। तुम सबको शरीर है।

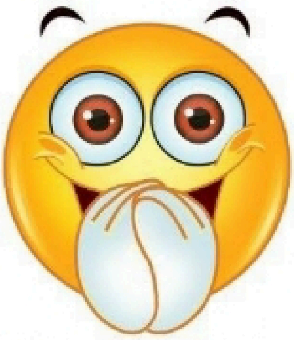

कापारी खुशी

08-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

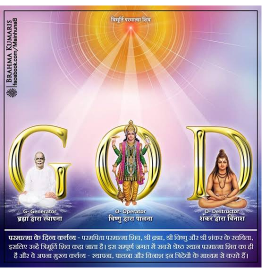

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥
हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं—इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्वसे* जान लेता है, वह शरीरको त्यागकर फिर जन्मको प्राप्त नहीं होता, किन्तु मुझे ही प्राप्त होता है॥ ९॥

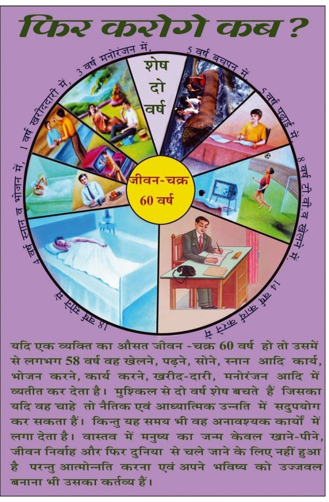

देहधारी हो। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को भी सूक्ष्म शरीर है। जैसे तुम आत्मा हो वैसे मैं भी परम आत्मा हूँ। मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है, और कोई भी ऐसे जन्म नहीं लेते हैं। यह मुकरर है। यह सब ड्रामा में नूंध है। कोई अभी मर जाते हैं - यह भी ड्रामा में नूंध हैं। ड्रामा की समझानी कितनी मिलती है। समझेंगे नम्बरवार। कोई तो डल बुद्धि होते हैं। तीन ग्रेड्स होती हैं। पिछाड़ी की ग्रेड वाले को डल कहा जाता है। खुद भी समझते हैं यह फर्स्ट ग्रेड में है, यह सेकण्ड में है। प्रजा में भी ऐसे ही है। पढ़ाई तो एक ही है। बच्चे जानते हैं यह पढ़कर हम सो डबल सिरताज बनेंगे। हम डबल सिरताज थे फिर सिंगल ताज फिर नो ताज बनें। जैसा कर्म वैसा फल कहा जाता है। सतयुग में ऐसे नहीं कहेंगे। यहाँ अच्छे कर्म करेंगे तो एक जन्म के लिए अच्छा फल मिलेगा। कोई ऐसे कर्म करते हैं जो जन्म से ही रोगी होते हैं। यह भी कर्मभोग है ना। बच्चों को कर्म, अकर्म, विकर्म का भी समझाया है। यहाँ जैसा करते हैं तो उसका अच्छा वा बुरा फल पाते हैं। कोई साहूकार बनते हैं तो

जरूर अच्छे कर्म किये होंगे। अभी तुम जन्म-जन्मान्तर की प्रालब्ध बनाते हो। गरीब साहूकार का फ़र्क तो वहाँ रहता है ना, अभी के पुरुषार्थ अनुसार। वह प्रालब्ध है अविनाशी 21 जन्मों के लिए। यहाँ मिलता है अल्पकाल का। कर्म तो चलता है ना। यह कर्म क्षेत्र है। सतयुग है स्वर्ग का कर्म क्षेत्र। वहाँ विकर्म होता ही नहीं। यह सब बातें बुद्धि में धारण करनी है। कोई विरले हैं जो सदैव प्वाइंट्स लिखते रहते हैं। चार्ट भी लिखते-लिखते फिर थक जाते हैं। तुम बच्चों को प्वाइंट्स लिखनी चाहिए। बहुत महीन-महीन प्वाइंट्स हैं, जो सब तुम कभी याद नहीं कर सकेंगे, खिसक जायेंगी। फिर पछतायेंगे कि यह प्वाइंट तो हम भूल गये। सबका यह हाल होता है। भूलते बहुत हैं फिर दूसरे दिन याद पड़ेगा। बच्चों को अपनी उन्नति के लिए ख्याल करना है। बाबा जानते हैं कोई विरले यथार्थ रीति लिखते होंगे। बाबा व्यापारी भी है ना। वह है विनाशी रत्नों के व्यापारी। यह है ज्ञान रत्नों के। योग में ही बहुत बच्चे फेल होते हैं। एक्यूरेट याद में कोई घण्टा डेढ़ भी मुश्किल रह सकते हैं। 8 घण्टा

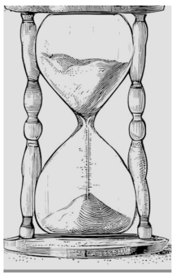

तो पुरुषार्थ करना है। तुम बच्चों को शरीर निर्वाह भी करना है। बाबा ने आशिक-माशूक का भी मिसाल दिया है। बैठे-बैठेयाद किया और झट सामने आ जाते। यह भी एक साक्षात्कार है। वह उनको याद करते, वह उनको याद करते। यहाँ तो फिर एक है माशूक, तुम सब हो आशिक। वह सलोना माशूक तो सदैव गोरा है। एवर प्योर। बाप कहते हैं मैं मुसाफिर सदैव खूबसूरत हूँ। तुमको भी खूबसूरत बनाता हूँ। इन देवताओं की नेचुरल ब्युटी है। यहाँ तो कैसे-कैसे फैशन करते हैं। भिन्न-भिन्न ड्रेस पहनते हैं। वहाँ तो एकरस नेचुरल ब्युटी रहती है। ऐसी दुनिया में अब से तुम जाते हो। बाप कहते हैं मैं पुराने पतित देश, पतित शरीर में आता हूँ। यहाँ पावन शरीर है नहीं। बाप कहते हैं मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त में प्रवेश कर प्रवृत्ति मार्ग की स्थापना करता हूँ। आगे चल तुम सर्विसएबुल बनते जायेंगे। पुरुषार्थ करेंगे फिर समझेंगे। आगे भी ऐसा पुरुषार्थ किया था, अब कर रहे हैं। पुरुषार्थ बिगर तो कुछ भी मिल न सके। तुम जानते हो हम नर से नारायण बनने का पुरुषार्थ

Sweet song at last pages

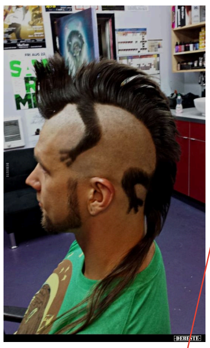

Also Recently

The T-shirt worn by Huma Qureshi Costs Rs 65,000 😱

Torn T-shirt

कर रहे हैं। नई दुनिया की राजधानी थी, अब नहीं है, फिर होगी। आइरन एज के बाद फिर गोल्डन एज जरूर होगी। राजधानी स्थापन होनी ही है। कल्प पहले मुआफिक। अच्छा!

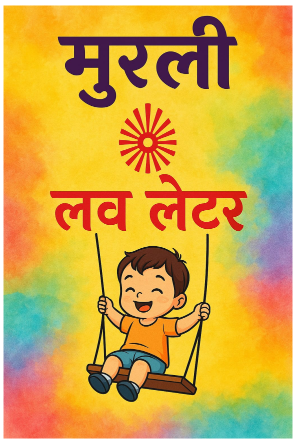

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

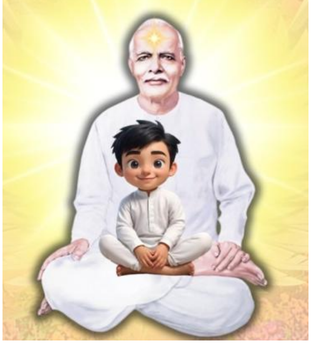

1) सरेन्डर के साथ-साथ निश्चयबुद्धि बनना है। कोई भी छी-छी काम न हो। अन्दर कोई भी अवगुण न रहे तब अच्छा पद मिल सकता है।

2) ज्ञान रत्नों का व्यापार करने के लिए बाबा जो अच्छी-अच्छी प्वाइंट्स सुनाते हैं, उन्हें नोट करना है। फिर उन्हें याद करके दूसरों को सुनाना है। सदा अपनी उन्नति का ख्याल करना है।

08-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- बालक और मालिकपन की समानता द्वारा सर्व खजानों में सम्पन्न भव

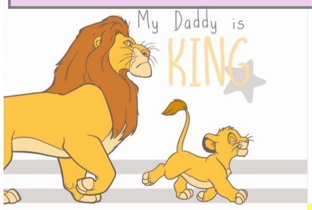

जैसे बालकपन का नशा सभी में है ऐसे बालक सो मालिक अर्थात् बाप समान सम्पन्न स्थिति का अनुभव करो।

मालिकपन की विशेषता है - जितना ही मालिक उतना ही विश्व सेवाधारी के संस्कार सदा इमर्ज रूप में रहें।

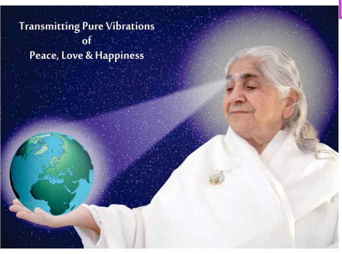

मालिकपन का नशा और विश्व सेवाधारी का नशा समान रूप में हो तब कहेंगे बाप समान।

बालक और मालिक दोनों स्वरूप सदा ही प्रत्यक्ष कर्म में आ जाएं तब बाप समान सर्व खजानों से सम्पन्न स्थिति का अनुभव कर सकेंगे।

स्लोगन:- ज्ञान के अखुट खजानों के अधिकारी बनो तो अधीनता खत्म हो जायेगी।

अव्यक्त-इशारे -

स्वयं और सर्व के प्रति

मन्सा द्वारा योग की शक्तियों का प्रयोग करो

जैसे वाचा सेवा नेचुरल हो गई है, ऐसे मन्सा सेवा भी साथ-साथ और नेचुरल हो। वाणी के साथ मन्सा सेवा भी करते रहो तो आपको बोलना कम पड़ेगा। बोलने में जो एनर्जी लगाते हो वह मन्सा सेवा के सहयोग कारण वाणी की एनर्जी जमा होगी और मन्सा की शक्तिशाली सेवा सफलता ज्यादा अनुभव करायेगी।

In front of बापदादा
बालक

In front of Maya
मालिक

फाइनल पेपर

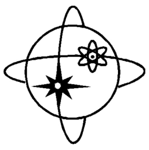

सदा कल्प पहले माफिक अपने को अंगद के समान अचल समझते हो? अंगद के समान अचल अर्थात् सदा निश्चय बुद्धि विजयन्ती। जरा भी हलचल में आये तो विजयी बन नहीं सकेंगे। माया के विघ्न यह तो ड्रामा में महावीर बनाने के लिए पेपर के रूप में आते हैं। बिना पेपर के कभी क्लास चेन्ज नहीं होता। पेपर आना अर्थात् क्लास आगे बढ़ना। तो पेपर आने से खुश होना चाहिए न कि हलचल में आना है। माया से भी लेसन सीखो, वह कभी भी हलचल में नहीं आती - अटल रहती, यही लेसन माया से सीख मायाजीत बन जाओ।

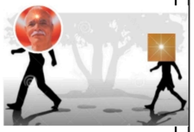

स्नेह का रेसपान्ड है फालोफादर। जिससे स्नेह होता है उसको आटोमेटिकली फालो करना होता है। सदा याद रहे कि यह कर्म जो कर रहे हैं यह फालो फादर है। अगर नहीं तो स्टाप। फालो फादर है तो करते चलो, कापी ही करनी हैं ना। बाप को कापी करते बाप बन जाओ। कापी करने के लिए जैसे कार्बन पेपर डालते हैं वैसे अटेन्शन का पेपर डालो तो कापी हो जायेगा।

अभी अपने को तीव्र पुरूषार्थी नहीं बनायेंगे तो आगे चलकर यह समय भी खत्म हो जायेगा फिर टू लेट हो जायेंगे, वंचित रह जायेंगे। अभी हर शक्ति से स्वयं को सम्पन्न बनाने का समय है। अगर स्वयं-स्वयं को सम्पन्न नहीं कर सकते हो तो सहयोग लो, छोड़ नहीं दो। सम्पन्नता की निशानी है सन्तुष्टता। इसलिए सदा सन्तुष्ट आत्मा बनो।

(18.01.1979)

7.2 रोज़ अमृतवेले सारे दिन के लिए अटेन्शन रखो, स्व की चेकिंग करो :

(अ) सदा अनुभव करते हो कि हमारा आत्मिक स्वरूप का सितारा चमक रहा है? सदा चमकता है वा कभी-कभी चमकता है? जब बाप द्वारा नॉलेज का सितारा चमक गया, तो अभी बुझ तो सकता नहीं, लेकिन चमक की परसेन्टेज कम और ज़्यादा हो सकती है। उसका कारण क्या? अटेन्शन की कमी। जैसे दीपक में अगर सदा घृत डालते रहो, तो वह एकरस जलता रहेगा। घृत कम हुआ, तो हलचल करेगा। ऐसे अटेन्शन कम हो जाता है, तो परसेन्टेज की चमक भी कम हो जाती। इसलिए बापदादा की श्रेष्ठ मत है — रोज़ अमृतवेले सारे दिन के लिए अटेन्शन रखो। अटेन्शन रहता भी है, लेकिन और अण्डरलाइन करो। जहाँ अटेन्शन होगा वहाँ किसी भी प्रकार का टेन्शन नहीं हो सकता। जैसे रात होगी तो दिन नहीं हो सकता। टेन्शन है रात, अटेन्शन है दिन। तो दिन और रात दोनों इकट्ठे रह नहीं सकते। अगर किसी भी प्रकार का टेन्शन है, तो सिद्ध है अटेन्शन नहीं है। साधारण अटेन्शन और सम्पूर्ण अटेन्शन में भी अन्तर है। सम्पूर्ण अटेन्शन अर्थात् जो बाप के गुण वा शक्तियाँ हैं, वह अपने में हों।

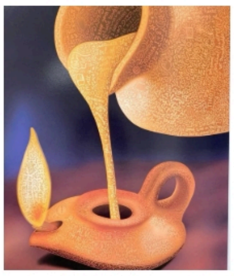

आज मुज आत्मा सजनी की मेरे प्यारे साजन से और उस प्राणप्यारे साजन की मुज सजनी से कुछ खट्टी कुछ मीठी अर्थात मजेदार रूह रीहान।

##########

song
Click

Manwa laage.. o manwa laage
Laage re sanware
Laage re sanware
Le tera hua jiya ka, jiya ka, jiya ka ye gaanv re

(मेरे प्यारे साजन,
मेरा मन जो की अब आप से ही लगा/जुड़ा रहता है जिससे की अब तो मेरे जिया का ये सारा गाँव आपका हुआ अर्थात ये दिल अब आपका और सिर्फ आपका हुआ।)

Manwa laage.. o manwa laage
Laage re sanware
Laage re sanware

Le khela maine jiya ka, jiya ka, jiya ka hai daav re
(और साथ ही साथ आपको पाने के लिए मैंने दिल/जान की बाज़ी लगा दी हैं।)

Musaafir hoon main door ka
Deewana hoon main dhoop ka
Mujhe na bhaye.. na bhaye, na bhaye chaanv re
(ओ मेरी प्यारी सजनी,
मैं हसीन मुसाफिर बहुत दूर, परमधाम से आया हुआ हूँ।
और मैं तो धुप/पवित्रता का ही दीवाना हूँ,
मुझे रिंचक मात्र भी छाँव/अपवित्रता भाति/पसंद नहीं हैं।)

हसीन मुसाफिर द्वारा शिवबाबा

समझाया है - तुम सब भक्तियां हो। मैं हूँ भगवान, ब्राइडग्रुम। तुम हो ब्राइड्स। तुम सब मुझे याद करते हो। मैं मुसाफिर बहुत ब्युटीफुल हूँ। सारी दुनिया के मनुष्य मात्र को खूबसूरत बनाता हूँ। 9/9/25

Manwa laage.. o manwa laage
Laage re sanware
Laage re sanware
Le tera hua jiya ka, jiya ka, jiya ka ye gaanv re

#####======$$$$$
【मैं आत्मा सजनी】
Aisi kaisi boli tere naino ne boli
Jaane kyon main doli
Aisa lage teri ho li main, tu mera..

(मेरे नयनो के नूर मेरे प्यारे साजन,
तुम्हारे नयनों ने ऐसी तो कैसी बोली बोली, जिससे की मुझे पता भी न रहा अर्थात सुधबुध भूल कर तुम्हारे प्यार में डोलने लगी अर्थात मगन/पागल हो गई।
और ऐसा लगा जैसे की मैं तो तुम्हारी हुई,
और तुम सिर्फ और सिर्फ मेरे......)

मुरली

(शिव साजन:)
mm.. Tune baat kholi kacche dhaago me piro li
Baaton ki rangoli se na khelun aise holi main
naa tera..
(ओ मेरी भोली सजनी 【भोली अर्थात जो माया के सभी रूपों को जानती नहीं की माया भी सर्वशक्तिमान हैं और एक पल की भी गफलत तुजे मेरा होने नहीं देंगी अर्थात दूर कर देंगी】,

तूने बाते तो बहुत ही अच्छी अच्छी और मीठी मीठी बोल के बातो की बहुत बड़ी और बापदादा को आकर्षित करने वाली माला ही बना ली।

परंतु सिर्फ ऐसी प्यारी प्यारी बातो की रंगोली से मैं तुम्हारे साथ होली नहीं खेलूंगा अर्थात मुझे तुमने जो भी बातों रूपी वायदे किये हैं उसे practical कर के दिखाओ।

तो जब तक तुम practical proof नहीं देती तब तक मैं तुम्हारा नहीं बन सकता।)

【मैं आत्मा सजनी】 ← m. imp
O.. kisi ka toh hoga hi tu
Kyun na tujhe main hi jeetun

आत्मा का दृढ संकल्प

(ओ मेरे प्यारे दिलतख्तनशीं साजन,
ये बात तो आपको माननी ही पड़ेंगी की किसी न किसी के आप साजन तो बनेंगे ही।
तो आपको क्यों न मैं ही जीतूं?

फिर चाहे उसके लिए कोई भी कीमत क्यों न चुक्तू करनी पड़े।

मेरे प्यारे साजन,
Please Underline the word कोई भी।)

【शिव साजन मंद मंद मुस्कुराते हुए बोले की..】
Khule khabon me jeete hain, jeete hain baawre
(मैं सारी श्रुष्टी का मालिक हूँ और मुझे पाने के लिए तुम जैसी कई सारी आत्माओ रूपी बाँवरी/पागल सजनिया ऐसे ही ख्वाबों में जीती हैं।

उसे ये मालुम नहीं की मुझे पाने के लिए कितनी कठिनायों का सामना करना पड़ेंगा, कितनी दृढ़ता रखनी होंगी।)

【मैं आत्मा सजनी】
Mann ke dhaage, o mann ke dhaage
Dhaage pe saanwre
Dhaage pe saanwre
Hai likha mene tera hi, tera hi, tera hi to naam re
(ओ मेरे मन के मीत,
चाहे आप मानो या न मानो परंतु मैंने जब से ब्राह्मण जन्म लिया हैं तबसे आपको पाने का ही लक्ष्य रखा हैं अर्थात मैंने मेरे मन के धागों पर सिर्फ और सिर्फ आपका ही नाम लिखा हैं।

और आप देखते जाइए - जो भी बातें मैंने कही हैं आपसे, उसको चाहे कितने ही कष्ट सहन कर के या फिर मर कर भी पूरा करेंगे।)

#####$$$$$$#####

【मैं आत्मा सजनी अपने मन ही मन】
Ras bundiya nayan piya raas rache
(मेरे नयनो की रस बून्द अर्थात मेरे नयनो के नूर मेरे साजन,
आप जब दादी गुलज़ार के तन में आते हो और stage पर खड़ी सभी आत्मा रूपी गोपिओ के साथ रास रचते हो और मिलते हो - जैसी दादी जानकीजी से मिलते हो।)

Dil dhad dhad dhadke shor mache
(तो दूर बैठी मुज आत्मा के इस दिल में अपरम अपार गति से धड़कने शोर मचाती हैं और मैं पागल बन सोचती हूँ की मैं कब दादी जी के मुआफिक ही साकार में तुमसे मिलूंगी?)

Yun dekh sek sa lag jaaye
Main jal jaaun bas pyaar bache
(और दादी को आपसे ऐसे मिलते हुए देख,

आप शमा का मुज परवाने पर शेक सा लगता हैं और उस ही शेक के कारन मैं इस देह अभिमान और सर्व विकारो सहित आप शमा पर एक पल की भी सोच बिना फ़िदा हो जाती हूँ , जिससे की बस आप और मैं अर्थात हमारा प्यार शेष रह जाता हैं।)

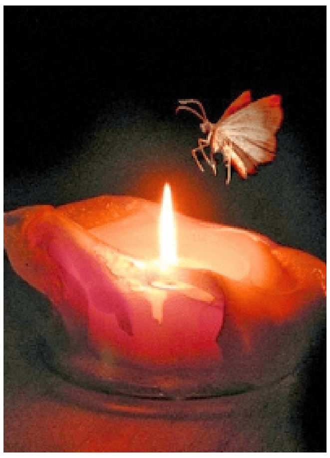

####$$$$%%%

【आखिर भी वह दिन अब आया की आया, जब मेरे प्यारे साजन आप मुझसे कहेंगे की..】

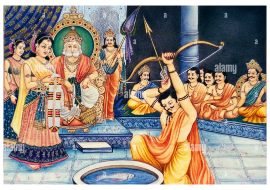

Aise dore daale kaala jaadu naina kaale
Tere main hawaale hua seene se laga le
Aa.. main tera...
(मेरी सिकिलधि सजनी,
तुम्हारी ध्रुव के मुआफिक लगन के कारन, और अर्जुन के मुआफिक तुम्हारी नज़रे जो सदा ही मुज पर टीकी रहती हैं अर्थात तुम्हारा मुझे पाने का ही एक मात्र जो लक्ष्य हैं और जब की अब आखिर वो लक्ष्य अर्थात मुझे पा ही लिया हैं तो ...

मैं भी अब तुम्हारे हवाले हुआ हूँ - तो आ जाओं मेरी बाहों में और मुझे अपने सीने से लगा लो अर्थात बाहों में ले लो।

तो अब मैं आख़िरकार सिर्फ और सिर्फ तुम्हारा हुआ।)

O.. dono dheeme dheeme jalein
Aaja dono aise milein
Zameen pe laage, na tere, na mere paanv re
(सारे कल्प के हिसाब से जो अब थोडा सा संगम का समय बचा हुआ हैं उसमे हम सच्चे प्यार की अगन में एक दूसरे में समा कर ऐसे धीमे धीमे जले की जिससे तुम्हारी 5000 वर्षो की प्यास बुज जाएँ।

और ऐसे combined रहे की उस स्थूल वतन या देहभान रूपी जमीं पे एक पल के लिए भी तुम्हारे पाँव न लगे और मैं तो हूँ ही परमधाम निवासी।)

Shiv Shakti (आत्मा)

Manva laage.. manva laage
Laage re sanware
Laage re sanware
Le tera hua jiya ka, jiya ka, jiya ka ye gaanv re

【मैं आत्मा सजनी】
Rahoon main tere naino ki, naino ki,
naino ki hi chaanv re...
(मेरे प्यारे साजन,
बस अब तो मुझे रहना ही हैं तुम्हारे नैनो की ही छाँव में।)

Le tera hua jiya ka, jiya ka, jiya ka ye gaanv re
Rahoon main tere naino ki, naino ki,
naino ki hi chaanv re...

Other Movie Song to submerge in the love of supreme
↓
Click